Q6. झारखंड के संथालों के निवास क्षेत्र, आर्थिक व सामाजिक स्थिति का वर्णन करें।

→ भारतीय जनजातियों में संथालों का सर्वप्रमुख स्थान है। डॉ० P.C. विश्वास के अनुसार संथाल भारत की सर्वाधिक अनुशासित जनजातियों में से हैं। मूलतः कृषक ये लोग खेती के अलावे आखेट व खाद्य संग्रहण द्वारा अपना गुजर-बसर करते हैं। अंधविश्वासी संथाल लोगों का सामाजिक जीवन बड़ा ही संगठित एवं विकसित ढंग का होता है। आधुनिक समाज के साथ तालमेल बिठाते हुए संथाल जनजाति निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है।

(i) निवास क्षेत्र (HABITAT) :- संथाल जनजाति झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़िसा व असम में पाई जाती है। परन्तु इनका मुख्य निवास स्थान झारखंड का संथाल परगना डिवीजन है जिसमें संथाल परगना, रांची, पलामू व हजारीबाग जिले शामिल हैं। ये समस्त क्षेत्र छोटानागपुर का पठारी भाग है। इनके निवास क्षेत्र के रूप में राजमहल की पहाड़ियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

ये क्षेत्र खनिज पदार्थों लोहा तथा कोयला की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध है। वर्षा भी पर्याप्त होती है। जंगल भी बहुत अधिक मात्रा में हैं। अतः शिकार हेतु पशु-पक्षी भी मिल जाते हैं। संथालों के निवास क्षेत्र को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्न हैं —

(a) जलवायु (CLIMATE) :- इस प्रदेश की जलवायु उष्ण कटिबंधीय मानसूनी है। यहाँ गर्मी का तापमान 30-35°C तक तथा जाड़े का 15-20° तक रहता है। ग्रीष्मकालिन वर्षा 160-180 cm तक होती है। वर्षा बंगाल की खाड़ी मानसून द्वारा ही होती है।

Scanned with CamScanner

जाड़े में भी 10 c.m तक वर्षा हो जाती है।

(b) वनस्पति (VEGETATION) :- वर्षा की अधिकता के कारण इस प्रदेश में घने वन पाए जाते हैं। मानसूनी पतझड़ वनों की अधिकता होती है। वनों का संथालों के जीवन में बड़ा महत्व है। वनों से इन्हें फल, अनाज, लकड़ी तथा शिकार की प्राप्ती हो जाती है।

(ii) आर्थिक उद्यम (ECONOMIC OCCUPATION) :- संथाल लोग मूलतः कृषक हैं। कृषि के अलावे ये लोग शिकार तथा खाद्य संग्रह भी किया करते हैं। ये लोग मुख्य रूप से चावल की खेती किया करते हैं। इनके आर्थिक जीवन के मुख्य पहलू निम्नलिखित हैं—

(a) कृषि (AGRICULTURE) :- संथाल जनजाति ने खेती करना 19 वीं शताब्दी में सिखा इससे पहले ये लोग जीविका निर्वाह हेतु पूर्णतः आखेट पर निर्भर थे। अब ये लोग चावल, ज्वार, बाजरा आदि की खेती करते हैं। जंगलों को साफ करके खेती करने वाली जातियों में संथाल सर्वोत्तम हैं लेकिन अभी भी ये बहुत अच्छे कृषक नहीं हैं। इनकी कृषि निम्न स्तर की है तथा उत्पादन बहुत कम होता है।

~~(b) [illegible] ([illegible]) :-~~

(b) शिकार (:- ये लोग कुशल शिकारी होते हैं। प्रायः अप्रैल के मध्य से जून तक ये लोग आखेट करते हैं और तालाबों, नदियों व झीलों में मछलीयाँ पकड़ते हैं।

(c) अन्य उद्यम :- संथाल लोग अपनी आर्थिक आत्मनिर्भरता खो चुके हैं किसी समय ये लोग कपड़ा, बर्तन और औजार बनाने का कार्य स्वयं करते थे। अब ये

Scanned with CamScanner

लोग निकट के खानों में काम करते हैं और मजदूरी भी। चाय के बागानों में तथा औद्योगिक क्षेत्र में भी ये लोग कार्य रत हैं। ये लोग जंगलों से लाख एकत्रित करते हैं और टोकरियाँ भी बुनते हैं।

(iii) सामाजिक जीवन (SOCIAL LIFE):- संथालों का सामाजिक संगठन बहुत ही उच्च ढंग का होता है। यह परहा (PERHA) प्रणाली पर आधृत होता है इसके अनुसार प्रत्येक गाँव का एक मुखिया होता है। यह गाँव में ही रहता है और गाँव के सभी निवासियों पर इसका राजनैतिक अधिकार होता है। बड़े गाँवों में समाज की सत्ता पंचायत के हाथों में होती है। लेकिन वहाँ भी गाँव के साधारण एवं राजनैतिक मामलों में मुखियों की बातें महत्वपूर्ण होती हैं। इनके सामाजिक जीवन के मुख्य पहलू निम्नलिखित हैं:—

(a) पारिवारिक जीवन (FAMILY LIFE):- संथाल लोगों में संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित है। इनका परिवार पितृ-सत्तात्मक होता है। परिवार का सबसे बड़ा-बूढ़ा व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है। परिवार के सभी सदस्य सामूहिक रूप से अर्थोपार्जन करते हैं।

(b) भाषा (LANGUAGE):- संथालों की मुख्य भाषा मुंडा है जो आस्ट्रिक भाषा की एक उप शाखा है। इसके अलावे ये लोग बिहारी, बंगाली व असमिया भी बोलते हैं। अतः ये लोग बहुभाषी होते हैं।

(c) धार्मिक जीवन (RELIGIOUS LIFE):- संथालों में मुख्य देवता सिंग बोंगा हैं। ये लोग पितरों की भी पूजा किया करते हैं। समय-समय पर मुर्गी व सूअर की बली दिया करते हैं। कृषि कार्यों की

Scanned with CamScanner

सफलता हेतु ये लोग सामूहिक उपवास रखते हैं। हरियाड़ तथा सोहराई इनके मुख्य त्यौहार हैं। बाहा का त्यौहार इनका सबसे पवित्र त्यौहार होता है।

(v) विवाह प्रथा (MARRIAGE SYSTEM) :- संथाली पूर्णतः बहिर्विवाही होते हैं। ये लोग हमेशा गोत्र से बाहर विवाह करते हैं। उपगोत्र के अन्तर्गत विवाह नहीं किया जाता है। बहु विवाह की प्रथा का प्रचलन नहीं है परन्तु पत्नी के बाँझ होने पर उसकी अनुमति ले कर दूसरा विवाह किया जा सकता है। प्राचीन काल में लड़के व लड़की की विवाह की न्यूनतम आयु क्रमशः 25 व 20 वर्ष होती थी परन्तु अब कम उम्र में ही शादियाँ होने लगी हैं। संथालों में 6 प्रकार के विवाह प्रचलित हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है —

(a) नियमित विवाह या बपला :- इस प्रथा में वर पक्ष द्वारा पहल की पहल की जाती है तथा घटकों लियो (जो रेबर कहलाते हैं) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दोनों पक्षों द्वारा लड़का-लड़की पसंद हो जाने पर मंगनी की रस्म अदा की जाती है। इस समय वर पक्ष द्वारा वधु पक्ष को रुपए व कपड़े दिए जाते हैं। वधु पक्ष द्वारा वर को एक गाय व अन्य उपहार दिए जाते हैं।

(b) घरदी जवाई :- यह प्रथा कुरूप लड़कियों हेतु अपनाई जाती है। इसमें लड़के को लड़की से विवाह करने पर एक जोड़ी बैल, खेती के औजार और कुछ चावल भी प्राप्त होता है।

(c) इतुत :- इस प्रथा में यदी कोई लड़की किसी लड़के को पसंद आ जाए तो लड़का उसके माथे पर लाल

Scanned with CamScanner

पूर्वक टिका लगा कर माग जाता है। इसके बाद सामुहिक रूप से मिल बैठ कर उन दोनों का विवाह सम्पन्न करा दिया जाता है यदि लड़की को लड़का पसंद न हो तो उसे समुचित रूप से तलाक लेना पड़ता है।

(d) <u>तीर बेलोक</u> :- इस प्रथा में इसके विपरित लड़की प्रयत्नशील होती है और अपने मनपसंद लड़के के घर में जा कर बैठ जाती है। वर पक्ष के लोग घर में मिर्ची जला देते हैं यदि लड़की इस तिखी चुंए को सह जाती है तो माना जाता है कि उसने पति को जीत लिया।

(e) <u>सेगा</u> :- यह प्रथा विधवा व तलाकशुदा स्त्रियों हेतु है इस प्रथा में स्त्रि अपनी सहेलियों के साथ पुरुष के घर जाती है वहां पुरुष उसके बालों व माथे में सिंदूर लगा देता है और विवाह हो जाता है।

(f) <u>किरिन जवाई</u> :- यह प्रथा उन स्त्रियों हेतु है जो विवाह पूर्व गर्भवती हो जाती है। यदि कोई लड़का ऐसी लड़की से विवाह करने हेतु तैयार होता है तो उसे दो बैल, एक गाय, अनाज व कुछ धन देकर दोनों का विवाह सम्पन्न कराया जाता है।

Scanned with CamScanner